लोक साहित्य में पर्यावरण चेतना

डा0 अनिल कुमार धीमान
सूचना वैज्ञानिक
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-249404 (उत्तरांचल)

मनुष्य का सम्बन्ध अपनी संस्कृति, रीति, रिवाजों, धार्मिक व सामाजिक कार्यों, पूजा–पाठ आदि से पुरातन काल से रहा है।जब से मानव ने समूहों में रहना सीखा है तभी से इस सम्बन्ध की शुरूआत मानी जा सकती है।

लोक–विज्ञान से तात्पर्य उस विज्ञान से है जिसके अर्न्तगत मनुष्य जाति के विभिन्न समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों आदि का अध्ययन किया जाता है।हमारे आदि काल की रचनाओं में भी लोक–विज्ञान देखने को मिलता है।विशेष काल के समय क्या–2 प्रचलन में था, इन सब की जानकारी उस समय के साहित्य में परिलक्षित होती है।अतः कहा भी गया है कि किसी भी समाज की जानकारी उसकी संस्कृति व इतिहास से समझी जा सकती है।

हमारी यह धरती जिसे हम पृथ्वी या वसुधा भी कहते है, मानव जाति से जुड़ी हैं।'वसुधैव कुटुम्बकम' भारतीय संस्कृति का उद्घोष हैं।अतः पृथ्वी का संरक्षण, मानव जाति का संरक्षण और पशु पक्षियों का संरक्षण समान रूप से आवश्यक है।उनके जीवन का संरक्षण होना ही संसार है।सम्पूर्ण प्राणी जगत का एक लम्बा इतिहास है और इस इतिहास पर जब हम दृष्टिपात करते है तो पाते हैं कि पर्यावरण भी उतने ही प्राचीन काल से चला आ रहा है, जब से प्राणी जीवन का आरम्भ हुआ है।

पर्यावरण विशेषज्ञों का अभिमत है कि पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन योग्य परिस्थितियों का निर्माण होने में लाखों वर्षों का समय लगा है और अनेक प्रकार की उथल–पुथल एंव असन्तुलन के बाद ही प्रकृति संतुलन की यह स्थिति निर्मित हो पायी है।प्रकृति की साझेदारी में वायुमण्डल, जल –मण्डल एंव जीवन मण्डल का एक निश्चित अनुपात है।यह अनुपात जब भी बिगड़ता है, प्रकृति संतुलन भी बिगड़ जाता है।पर्यावरण संतुलन के लिए धरती जब मिट्टी और पानी बढ़ेगा तभी सही विकास कहा जा सकता है। इसके लिए पृथ्वी को वनों से आच्छादित करना होगा।पूरे क्षेत्र में वनस्पतियाँ उगाकर शस्यश्यामला हरित क्रान्ति लानी होगी।जल के स्त्रोतों को पुनर्जीवित कर एवं मिट्टी के क्षरण को रोककर उपजाऊ भूमि को बढ़ावा देना होगा।आयुर्वेद में वर्णित जंगल, आनूप, एवं साधारण देश भूमि के अनुसार जंगल देश के विकास पर ध्यान देना होगा।जिस देश में छोटे–छोटे वृक्ष हों, वनस्पतियों का प्राचुर्य हो, छोटी–छोटी पहाड़ियाँ हों, जल थोड़ा परन्तु स्वच्छ हो, निर्वाध रूप से बहने वाली नदियाँ हों, सूर्य की धूप प्रचुर मात्रा में पड़ती हो, स्वच्छ, सुगन्धित वायु विविध गति से बहती हो, वह देश जंगल देश कहलाता है।यथा–

देशोऽल्पवारि दुर्गमनों, जांगला अल्परोगदः।
आनूपोविपरीतोस्मात्, समः साधारणः यतः।।
(अ.हृ)

प्रचुरोदक वृक्षों यो निवासों दुर्लभातपा :।
आनुपो वहृदोषस्य, समा साधारणोमतः।।
(च.वि.अ.3)

भारतीय संस्कृति विज्ञान व पर्यावरण

भारतीय संस्कृति में जिस पूजा–भाव का विकास हुआ, उसमें उपयोगिता और पारलौकिकता का मेल है।हिन्दू वृक्षों और पौधों को विभिन्न देवी–देवताओं का

निवास–मात्र ही नहीं मानतें अपितु परम्परा से वे उनकी रक्षा करने वाली शक्ति से भी परिचित रहे हैं और यह भी जानते हैं कि उनको अविवेक पूर्वक नष्ट करने का परिणाम प्रदूषण होगा अनेक पेड़ पौधों के आरोग्यवर्धक गुणों का महत्व समझा गया है तो दूसरे पौधों का धार्मिक या पारलौकिक–देवी शक्ति के निवास के रूप में।अनेक परम्परावादी हिन्दुओं के घरों के भीतर तुलसी का पौधा रहता है और बाहर नीम का वृक्ष।उनके उद्यान में केला, आँवला, पीपल, वट और कभी कभी गूलर के वृक्ष होते हैं।स्त्रियाँ इस वृक्ष की पूजा करती है और त्योहार के अवसर पर पूरा परिवार पूजा करता है। भारतीय संस्कृति का प्रादुर्भाव उतुंग पर्वतश्रेणियों, वन प्रान्तों, हरित हिमाच्छादित घाटियों, सुरभ्य नदियों के स्वच्छ तटों एवं विशाल सागर के वनाच्छादित प्रदेशों से हुआ है। मन्त्रद्रष्ट्रा ऋषियों एवं साधु–सन्तों ने अपने जीवनोत्कर्ष एवं जनकल्याण की कामना से सतत चिन्तन एवं मनन कर लोक कल्याण की कामना की है।प्रकृति को ईश्वर मानकर इसकी पूजा, अर्चना एवं स्तुति का विधान बनाया है।इस प्रकार से कतिपय मंत्र वेदों, उपनिषदों एवं धर्मग्रन्थों में मिलते हैं।यथाः–

अहोएषां वरं जन्म, सर्वप्राण्युपजीवनम्।
धन्या यही सहायेम्यो निराशायान्तिनार्थिनः।।

आँ द्यौ शान्तिः पृथ्वी शान्तिः औषधय शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिः सर्वारिष्ठः शान्तिः हिः।।
(अथर्ववेद)

ऋग्वैदिक काल में, ऋषियों ने वृक्षों को परमात्मा के विभिन्न गुणों का प्रतीक माना है।ऋग्वेद का एक पूरा स्त्रोत, वृक्षों की, मुख्यतया उनकी रोगमुक्त करने की विशेषताओं की प्रशंसा में रचा गया है।सबसे बढ़कर, यज्ञ सम्बन्धी उपकरणों को देवता कहा गया है (ऋग्वेद–10.97)। इनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण बलि–स्तम्भ है, जिसकी प्रशंसा एक श्लोक में गाई गई है (ऋग्वेद–3.8)। सामान्यतया 'वृक्षः' तथा 'वीरूद्ध' पदों का प्रयोग ऋग्वेद में और बाद की संहिताओं में किया गया है।ऋग्वेद तथा आगे चलकर संहिताओं में सुप्रसिद्ध 'सोमवृक्ष' का उल्लेख वनस्पति के रूप में बार बार किया गया है।ऋग्वेद के पूरे नौवें मण्डल के छह स्त्रोत इसी पौधे की प्रशंसा में समर्पित हैं।ऋग्वेद में वर्णित अन्य वृक्ष शाल्मली या सेंमल, खदीरा, सिंपस और विभदक हैं।अथर्ववेद तथा बाद की दूसरी संहिताओं में दो अन्य महत्वपूर्ण वृक्ष शमी और पलाक्ष का भी उल्लेख मिलता है।इक्षु अथवा ईख भी वैदिक युग में उगाया जाता था।फूल धारण करने वाले वृक्षों में पवन या पलाश, कमल व कुमुद और फल धारण करने वाले वृक्षों में उर्वरूक, कर्कन्दु, कुवल, उडुंबर, खजूर तथा बिल्व का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में मिलता है।वैदिक स्त्रोंतो में सोम भगवान को एक पौधे और वैदिक काल के एक अत्यन्त लोकप्रिय देवता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ऋग्वेद काल में वृक्षों का क्या महत्व था, यह निम्न प्रकार समझा जा सकता हैः–

आप औषधिरूप नोडवन्तु।
दयौर्वना गिरयों वृक्षकेशाः।।
श्रृणोत न ऊर्जा पतिर्गिर :।
स नमस्तरीयां इषिरः परिज्गा।।
शृन्वन्त्वापः पुरा न शुभ्रा :।
परि स्त्रुचो बवृहाणस्यादे :।।
(ऋग्वेद–5.41.11.12)

''वनस्पतियाँ, जलधाराएँ, आकाश, वन और वृक्षादित पर्वत हमारी रक्षा करें।ताजगी से भर देने वाला स्वामी, चंचल पवन जो आकाश के बादलों में तेजी से दौड़ता है, हमारे गान सुनें और छिन्न–भिन्न पर्वतों में आगे बढ़ती स्फटिक सी स्वच्छ जलधाराएँ हमारी प्रार्थना सुने।''

अथर्ववेद में वृक्षों को वनों के स्वामी के रूप में व्यापित किया गया है और यह भी

कहा गया है कि ये मनुष्यों को पाप से बचाते हैं।

अग्निं बूमो वनस्पतीनोषधीरूत वीरूध :।
इन्द्रं वृहस्पति सूर्य ते नो मुंचन्त्वंहस :।।
(अर्थववेद 11.6.1)

''हम परमात्मा की शरण में जाते हैं, हम वन देवता, वृक्षों, पौधों और औषधियों की शरण में जाते हैं। ये सब हमें पाप से छुड़ावें।

उपनिषद्–काल के ऋषियों ने वनस्पतियों में परमात्मा के अस्तित्त्व के भी दर्शन किये हैं।वे कहते हैं– जो परमात्मा इस बृह्माण्ड, जल व अग्नि में व्याप्त हैं, वही वृक्षों और औषधियों में भी निवास करता है। काथक उपनिषद् सम्पूर्ण संसार को एक अश्वत्थ वृक्ष मानता है।छान्दोग्य उपनिषद में उसका उदाहरण एक सजीव सत्ता के रूप में दिया गया है

अस्य सोमय महतो वृक्षस्य यो
मुलेडभ्यान्हन्याज्जीवन स्त्रवेद्यो।
मध्ये भ्याहन्याज्जीवन स्त्रवेद्योऽ ग्रेभ्याहन्याज्जीवन स्त्रवेत्।।
से एषं जीवनात्मनानुग्रभूत पपीयमानों
मोदमानस्तिष्ठंति।
अस्य यवेकांशाखां जीवो जहात्यथ सा शुष्यति।।
द्वितीयां जहात्यथ सा शुष्ययति तृतीया जहात्यथ सा शुष्यति। सर्व ज्हाति सर्वः शुष्यति।।
(छान्दोगय उपनिषद 6.11.1–2)

अर्थात ''जब कोई इस वृक्ष की जड़ को काटता है तो उसमें से (रक्त) स्त्राव होता है, क्योंकि वह जीवित है। जब कोई इसके मध्य को काटता है तो उसमें से (रक्त) स्त्राव होता है, क्योंकि वह जीवित है (और) जब कोई उसके सिर को काटता है तो उसमें से (रक्त) स्त्राव होता हैं, क्योंकि वह जीवित है।इस तरह उसमें आत्मा का निवास होने से वह आनन्दपूर्वक खड़ा रहता है।फिर, यदि किसी शाखा से प्राण निकल जाते हैं तो वह सूख जाती है, दूसरी शाखा से प्राण निकल जाते हैं तो वह भी सूख जाती है।यदि वृक्ष के प्राण निकल जाते है तो वह मुरझा जाता है या बिल्कुल सूख जाता है।अतः हे प्रिय, तुम इस पर ध्यान दो।''

महाकाव्यों एवं पुराणों के काल में वनस्पति के सम्बन्ध में हिन्दू विचाराधारा और विस्तृत हुई। रामायण और महाभारत के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उन दिनों अरण्य प्राकृतिक जंगल थे एवं वन कृत्रिम जंगल। उन लोगों ने इनका नाम रखा – औषध वन, देवदारू वन, कदली वन, मधु वन, कुंदन वन आदि।रामायण और महाभारत के युग में ऐसे उदाहरण हैं जहाँ वृक्षों की पूजा की जाती है और वृक्षार्युवेद की एक शाखा का उदय उद्यान के विकास एवं वृक्षारोपण के रूप में हुआ।अग्निपुराण में ऐसा वर्णन है कि यदि एक राष्ट्र एवं इसके निवासी का उत्थान होता है तो जंगलों को नष्ट नहीं करना चाहिए।वनों का विनाश का फल अन्ततः अनावृष्टि एवं जीवनाश होगा।महाभारत में कहा है:–

धनानामपि वृक्षाणामाकाशोडस्ति न संशयः।
तेषां पुष्पफलप्यक्तिर्नित्यम् समुपपद्यते।।
उष्मतौश्लायते वर्ण त्वक् फलं पुष्पमेव च,
म्लायते शीर्यते चापि स्पर्शस्तेनात्र विद्यते।
वायुवग्न्यशनि निर्धाषैः फलं पुष्पं निशीर्यतें।।
श्रोत्रेण गृह्यते वृक्षं सर्वतश्चाव गच्छति।
नः यहष्टश्च माग्रार्तस्त तस्मात्यश्यन्ति पादपा :।।
पुण्यापुन्यस्तथा गन्धेपैश्च विवि धअपि।
आरोगाः पुष्पिताः सन्ति तस्माज्जिघ्रन्ति पादपः।।
(महाभारत, मोक्षपर्व 14.8.10–4)

अर्थात ''वृक्ष यद्यपि ठोस होते हैं, किन्तु उनमें आकाश के सब गुण रहते हैं, इसमें कोई सन्देह नही है। जीवित होने के कारण वे फूलते और फलते हैं।वे उष्णता का अनुभव करते हैं।उनके फूलों और फलों पर गर्मी का प्रभाव पड़ता है और सूख जाने पर वे नीचे गिर पड़ते हैं।इससे सिद्ध होता है कि उनमें स्पर्श ज्ञान भी होता है।हवा, अग्नि, ध्वनि तथा बादलों के गर्जने के असर से पेड़ों के फूल झड़ जाते हैं।आवाज तो सिर्फ कान से ही सुनी जा सकती है, इससे सिद्ध होता है कि पेड़ों में

सुनने की शक्ति भी होती है।लताएँ वृक्षों से लिपट जाती है और नीचे से चोटी तक बढ़ जाती हैं।रास्ते को देखे बिना कोई आगे नही बढ़ सकता।इससे स्पष्ट होता है कि वृक्षों में देखने की शक्ति होती है।अच्छी और बुरी गंध पेड़ की वृद्धि पर प्रभाव डालती है।सुवास से उनमें फूल खिलते है और दुर्गन्ध उन्हें पीड़ित करती है।इससे पता चलता है कि वृक्षों में सूंघने की शक्ति भी होती हैं।''

रामायण में भी अनेक स्थलों पर वनस्पति का सौंदर्य और प्राचुर्य बतलाया गया है तथा वृक्षों एवं वनों का कवित्वमय वर्णन मिलता है। वृक्षों को पूजनीय और सौभाग्यदायक माने जाने के प्रमाण मिलते हैं। सीता हाथ जोड़कर न्याग्रोध वृक्ष की प्रार्थना इस प्रकार करती है–

न्यग्रोधं समुपागम्य वैदेही चाभ्यवन्दत।
नमस्तेऽस्तु महावृक्ष पारयेन्मे पतिर्व्रतम्।।
कौशल्यां चैव पश्येम सुमित्रां चयशस्विनीम्।
इति सीतांजलिं कृत्वा पर्यगच्छन्मनस्विनी।।

(रामायण, अयोध्या कांड 53.24–26)

''हे शक्तिशाली वृक्ष! मै तुझे प्रणाम करती हूँ। मेरे पति का प्रण पूरा कराने की दया करो, जिससे मैं अपनी पूजनीय सास कौशल्या और सुमित्रा के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ। वेदादि धर्म ग्रंथों में पीपल के वृक्ष की पूजा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। भागवद्गीता में उसे स्वयं भगवान् कृष्ण का अवतार कहा गया है। कृष्ण जी कहते हैं – '' समस्त वृक्षों में मैं अश्वत्थ (पीपल) हूँ।'' (गीता 10.26)। इस संसार की माया की तुलना गीता में पीपल के वृक्ष से की गई है –

अधश्चोर्ध्व प्रसृतास्तस्य शाखा ग्रणप्रवन्द्ध
विषयप्रवालाः। अध्श्च मूलान्यनुसंततानि
कर्मानुबंधीनि मनुष्यलोके।।

(गीता 15.2)

''इस वृक्ष की शाखाएं ऊपर और नीचे की ओर फैली हैं। त्रिगुणात्मिका माया जिनका पोषण करती है और जिनमें विषयभोग रूप कोपलें और वासना रूपी जड़ें नीचे और ऊपर फैली हुई मनुष्य को कर्मों के अनुसार बाँधती है।''

इसी प्रकार, पुराण–साहित्य में भी वनों आदि की महत्ता परिलक्षित होती है। अग्नि पुराण में प्लाश वृक्ष को मकान की उत्तर दिशा में, न्याग्रोध को पूर्व दिशा में, गूलर को दक्षिण में और पीपल को पश्चिम में लगाये जाने का निर्देश दिया गया है, ऐसा निवास स्थान उसमें रहने वालों के लिए शुभ माना जाता है (274.24)।नियम पूर्वक वृक्षों को जल और खाद पहुँचाना एक पुनीत कर्तव्य कहा गया है। कुछ वृक्षों को श्रेष्ठतर माना गया है, उदाहरणार्थ स्कंद पुराण में पीपल को भगवान विष्णु के समान बताया गया है (189.65) किन्तु उसमें यह विश्वास भी व्यक्त किया गया है कि परमात्मा भिन्न–भिन्न स्वरूपों में प्रायः सभी वृक्षों विद्यमान है –

पार्वती विल्ववृक्षस्यां लक्ष्मी च तुलसीगताम्।
आदौ सर्ववृक्षमयं मूर्व विश्वमजायत।।

(स्कंद पुराण, 15.21)

''सृष्टि के समय में मैं (ईश्वर) समस्त पेड़ पौधों में विद्यमान रहा हूँ।'' किन्तु देवी पार्वती बिल्व में तथा देवी लक्ष्मी तुलसी निवास करती हैं।''

पद्मपुराण (सृष्टि खंड, 59.7) में यह वर्णन किया गया कि जिस घर में तुलसी का पौधा रहता है उसके निवासी भाग्यशाली होते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण (प्रकृति खंड 21. 37) में कहा गया है कि जिस स्थान पर तुलसी का पौधा लगा गया है वह स्थान पवित्र एवं प्रायः देवताओं को निवास स्थल माना जाता है। हिन्दू–परिवारों में तुलसी के पौधे की पूजा के अनेक कारण हैं। यथा –

तुलसीयस्य भवने प्रत्यहं परिपूज्यते।
तद्गृहंनोसर्पन्ति कदाचिद्यमकिङ्करा:।।

(स्कंद पुराण, 21.66)

''हिन्दू परिवारों में तुलसी के पौधे की पूजा ज्यादातर स्त्रियों के द्वारा की जाती है क्योंकि इस पौधे को पवित्र माना जाता है, वन दाम्पत्य जीवन को दीर्घायु देता है तथा औषधीय गुणों से परिपूर्ण होता है। यह विश्वास भी किया जाता है कि जिस गृह में प्रतिदिन तुलसी की पूजा की जाती है उसमें यमदूत प्रवेश नहीं करते।''

वृक्षों की महिमा को ध्यान में रखते हुए, विष्णु पुराण में तो वनों को निम्न प्रकार वर्गीकृत भी किया गया है।

1. अंगिरा वन, 2. प्राच्य वन, 3 नैमिषारण्य, 4. पंचनद वन, 5. अपरंटक वन, 6. वामन वन, 7. दसनिक वन, 8. सौराष्ट्र वन, 9. करूषा वन, 10. महाकण्टारा,11. दण्डकारण्य, 12. कलिंग वन व 13. कलेश वन।

यह भी कहा गया है कि इन वनों–उपवनों के कटान एवं विदोहन करने पर अनावृष्टि एवं अकाल पड़ने की अधिक सम्भावना बनी रहती है।

हिन्दू लोग वृक्षों को ईश्वर के विभिन्न रूपों का निवास–स्थान भी मानते है। कूर्म पुराण (36.26) के अनुसार भगवान महेश्वर वट वृक्ष में निवास करते हैं। अन्य बहुत से वृक्षों को हिन्दू लोग एक या अनेक देवी–देवाताओं से जोड़ते है। विविध प्रकार की वस्तुएँ जो वृक्ष से मिलती हैं, वे बहुत से धार्मिक–अनुष्ठान और उत्सव में प्रयुक्त होती हैं। उदाहरण के लिए, त्रिपत्री बेल शिव पर चढ़ाया जाता है। साल वृक्ष में विष्णु का निवास माना जाता है। भवन निर्माण में साल की एक लकड़ी का उपयोग भी सुख–समृद्धि देने वाला माना जाता है। वामन पुराण के अनुसार (17. 5–8) कुछ वृक्षों को एक न एक विशेष देवी–देवताओं के अंग–विशेष से उत्पन्न कहा गया है। बाराह पुराण में वन–महोत्सव या वृक्षारोण समारोह का भी वर्णन है–

अश्वस्थमेंक पिचुमिन्दमेकं न्याग्रोधमेकं
दशपुष्पजातीः। द्वे द्वे तथा दाडिममातुलुंगे
पंचाग्ररोपी नरकं न याति।।

(स्कंद पुराण, 172.39)

'' जो कोई एक पीपल, एक बड़, दस फूलों के पौधे या लताएं, दो अनार, दो नांरगी और पाँच आम के वृक्ष लगाता है वह नरक में नहीं जाता। मत्स्यपुराण में वृक्षों की महिमा निम्नानुसार वर्णित है –

दश कूप समावापी, दशवापी समोह्दः।
दश ह्द समः पुत्रों, दश पुत्र समो दुमः।।

''दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है। उस समय वृक्षों को इज्जत दी जाती थी और उन्हें काटना निषेध था। स्कंद पुराण में ऐसे वृक्षों की एक लंबी सूची दी गई है जो केवल यज्ञ के उद्देश्य से काटे जाने चाहिए और वे भी वर्षा ऋतु में कदापि नही–

एतेषां सर्ववृक्षाणाम् छेदनं नैव कारयेत्।
चातुर्मास्ये विशेषेण बिना यज्ञादिकारणम्।।

(स्कंद पुराण, 20.38)

अर्थात् ''इन सभी वृक्षों को काटना निन्दनीय है। यज्ञ के उद्देश्य के सिवाय वृक्षकभी न काटे जाएं और विशेषकर वर्षा ऋतु में तो काटे ही न जाएं।'' पद्मपुराण के अनुसार वृक्षों को काटना नरक जैसा दंडनीय अपराध है (56.40–41)।

अग्निपुराण कहता है कि वृक्षारोपण और आनंद–वाटिकाओं का निर्माण पाप परिशोधन एवं सुखोपभोग में सहायक होते हैं। ऐसे प्रसंग ऋग्वेद (5.3.8–2) और सांख्यायन गृह्मसूत्र (5.32) में भी मिलते हैं। वृहत्संहिता कहती है यदि मकान के पश्चिमी कोने पर पीपल का वृक्ष लगाया जावे तो वह गृह–स्वामी के लिये सौभाग्य लाने वाला होता है। इन धर्म ग्रथों में वृक्षारोपण की समानता किसी ब्राह्मण को

दिये जाने वाले गोदान या भूमिदान से बताई गई है। ''कोटिल्य अर्थशास्त्र'' पेड़–पौधों को नष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के दंड निर्धारित करता है –

''नगर के पास वाले उद्यानों के फलदायी वृक्षों की, फूलदायी वृक्षों की अथवा छाया देने वाले वृक्षों की कोंपल काटने वाले पर छह पणों का अर्थदंड लगाया जायेगा, उन्हीं वृक्षों की छोटी–छोटी शाखाएं काटने के लिए बारह पण और बढ़ी शाखाओं को काटने के लिए चौबीस पणों का अर्थदंड भरना पड़ेगा। उन्हीं वृक्षों के तने काटने वाला पहले निर्धारित अर्थदंड का पात्र होगा और पेड़ों को गिराने वाला माध्यमिक अर्थदंड का।''

अन्य धर्मों में पर्यावरण

यदि हम अन्य धर्मों की बात करें तो, बौद्ध धर्म में वनों की रक्षा को प्राथमिकता देने को कहा है। महात्मा बुद्ध के अनुसार ''वन प्रकृति की ऐसी जीती–जागती देन है, जिसमें प्राणियों के लिए अपार दया और परोपकारिता का आगार है। वन दूसरों के प्रति करूणा के स्त्रोत हैं एवं बदले में अपने लिए कुछ याचना नहीं करते। वे बड़ी उदारता से जीवनदायक पदार्थ भेंट करते हैं। इससे अधिक और क्या हो सकता है कि जो मनुष्य कुल्हाड़ी लेकर उसको काटने जाता है वे उसे भी सूर्य की गर्मी से बचाते हैं।''

मुकद्दस कुरान शरीफ में कई जगहों पर कुदरत (प्रकृति) की हिफाजत (संरक्षण) और उसे सरसब्जो शादाब (हरा–भरा) रखने का जिक्र आया है। पैगम्बर मुहम्मद साहब प्रकृति के दुश्मनों से त्रस्त होकर मक्का से मदीने जाने के लिए विवश हो गये और जब वहाँ से इस्लाम धर्म का प्रचार करते हुए पुनः मक्का लौटे तो सबसे पहले अपने अनुयायियों से मुखातिब होकर फरमाया कि ''जब तुम मक्का में दाखिल हो तो पानी में जहर न घोलो, पेड़ न काटो ताकि इन्सानियत उसके साये से महरूम न हो जावे और गर्मी की तपिश से इन्सानों के जिस्म झुलस न जायें।

वृक्षों को न काटने के सम्बन्ध में कुरान–शरीफ में लिखा है कि ''हरा पेड़ काटने वाले और जानवर को मारनेवालों को खुदा माफ नहीं कर सकता।''

''और जो लोग खुदा की खुशी के लिए और अपनी नीयत साबित रखकर अपना माल खर्च करते हैं, उनकी मिसाल एक बाग जैसी है जो ऊँचे पर है, उस पर जोर का मेंह पड़े, तो दूना फल जाये और अगर उस पर जोर का मेंह न पड़ा तो (उसकी) हल्की फुआर की काफी है।''

तुलसी का पौधा भारत में ही नहीं पश्चिमी देशों में भी प्रसिद्ध है। ईसाई लोग तुलसी को देवस्वरूप मानते हैं। ऐसी मान्यता है कि ईसा की कब्र पर यह पौधा उगा था। बाइबिल के अनुसार 'मनुष्य अपने मित्र (वृक्ष एवं वन्य पशुओं) के लिए प्राणों की आहुति दे दे, इससे बड़ा प्रेम का सबूत और क्या हो सकता है।

बाइबिल में वृक्षों के विषय में अनेक सुन्दर कथन मिलते है जो कि लोकोक्ति के रूप में प्रसिद्ध है।

In the place where the tree falleth there it shall (Old Test. Eccles.) अर्थात् –हाँ पेड़ गिरेगा वहीं रहेगा।

TheAxe is laid upto the root (New test Mathew)कुल्हाड़ी पेड़ की जड़ में ही लगती है। The tree is known by his fruits (New test Mathew) पेड़ फलों से ही पहचाना जाता है।

सिख धर्म में भी इसी तरह वनों की महत्ता दिखती है। सिख धर्म के प्रवर्त्तक गुरू नानक देव जी ने कहा कि ''वन ही जीवनदायी शक्ति है, जल ही जनक है, विशाल पृथ्वी सब की जननी है।'' गुरू नानक देव जी के इन शब्दों में प्रकृति के प्रति, जीवनदायिनी शक्ति के प्रति, पृथ्वी पर हमारे सुख–समृद्धि के स्त्रोत के प्रति, आदर व्यक्त करने की भारतीय परंपरा का सार निहित है। सृष्टि के अनंतकाल से हमने प्रकृति को सर्वोपरि माना है। भारतीय परंपरा में उस पर विजय पाने एवं जीत पर गर्वोवित करने का कोई स्थान कभी नहीं रहा।

यह ही नहीं अग्रेंजी कवि जार्ज मारिस ने वृक्षों के प्रति मार्मिक शब्दों में निम्नानुसार अपने भाव प्रकट किये हैं –

"हे लकड़हारे उस वृक्ष को मत काटो। उसकी एक शाखा का भी बाल बांका नहीं होना चाहिए। इस वृक्ष ने अपने यौवन काल में मुझे शरण दी, अब मैं उसकी रक्षा करूंगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि हमारे लोक–साहित्य परम्परा में पर्यावरण चेतना के भाव का और वनों का हमारे जीवन से शाश्वत सम्बन्ध रहा है। परंतु आज विज्ञान के युग में जहाँ एक ओर मनुष्य को लाभ प्राप्त हुए हैं वहीं दूसरी–ओर वनों के अंधाधुंध कटान व शहरीकरण में परिवर्तित होते वनों से पर्यावरण अस्थिरता का सामना करना पड़ रहा है। यदि यही हाल रहा तो एक दिन हमें वृक्षों को देख–पाना भी दुर्लभ हो जायेगा। और यदि ऐसा हुआ तो मानव जाति का खुद का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जायेगा। अतः हमें पर्यावरण की शुद्धता पर ध्यान देना ही होगा। निम्न वृक्ष व वनस्पतियाँ पर्यावरण को संतुलित रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकती है। अतः इन्हें

उगाने व संरक्षित करने हेतु कदम उठाये जाने चाहिए।

1. शुद्ध हवा प्रदान करने वाले वृक्ष

(क)बट, पीपल, नीम, पाकड़, जामुन, मौलसरी एवं पच्चशीरी वृक्ष, अशोक, कुटज, देवदारू, वरूण व बहेडा वृक्ष।
(ख) नीम पत्र, सफेद सरसों एवं साल का गोंद का धूपन देने से वातावरण स्वच्छ होता है।

2. प्रदूषण को रोकने वाले पादप

नीम, फरहद, मौलसरी, कपूर, तुलसी, भरवा, गन्धतृण, सीताबनी व नैरपत्ती। इनके रोपण एव धूपन से प्रदूषणमें लाभ होता है।

3. सवौषधि द्रव्य

(क) जटामांसी, तगर, मुरामांसी, वचा, कूठ, गुग्गुलू, सर्ज, चम्पा, नागरमोथा, कर्पूर व तुलसी आदि।

(ख) पत्तियाँ वायु में मिले प्रदूषण पदार्थों के सूक्ष्मकणों को सोख लेती हैं। इसलिए वृक्षारोपण का महत्व है।

(ग) पत्थर के कोयलों से उत्पन्न प्रदूषण रोकने के लिये जंगल जलेबी का रोपण लाभदायक है।

4. पर्वतीय क्षेत्रों के जलस्त्रोतों को सुरक्षित प्राकृतिक रूप से उगने वाली वनस्पतियाँ एवँ रखने वाले पादप

झाड़िया जैसे हिंसालु, किनगोड़, बांझ, बुरांस, उत्रीस, सिंयास, तिमला, कुजू व चमलई आदि वनस्पतियों को बढ़ावा देना।

वन आदि काटने से संकट आने का आभास लोगों को बहुत पहले ही हो गया था। इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था –

" हमारे जंगल कई मायनों में हमारे लिये बहुत जरूरी है। हमें उनको बनाये रखना चाहिये। जैसा कि स्पष्ट है, हम इन्हें काफी बर्बाद कर चुके हैं। यह सही है कि आबादी के बढ़ने के साथ–साथ हमें ज्यादा अनाज की जरूरत हो रही है। लेकिन यह जरूरत हम जंगलों को बर्बाद करके नहीं बल्कि खेती को और सघन बनाकर पूरी कर सकते हैं क्योंकि जंगल हमारे राष्ट्र की तरक्की के लिये निहायत जरूरी हैं।"

अतः आइये प्रदूषणमुक्त वातावरण का निर्माण करने एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सभी एकजुट होकर कार्य करें।

सहायक सन्दर्भ सूची

– उनियाल, माया राम. 1992. पर्यावरण सन्तुलन जनपदोध्वंस एवं भारत संस्कृति में वन

संरक्षण. सचित्र आयुर्वेद जनवरी अंकः पृष्ठ 56–64।
- उपाध्याय, कृष्णदेव. 1991. भारतीय लोक विश्वास. हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
- जैन, सुधाशुं कुमार. 1992. लोक वनस्पति विज्ञानः क्या और क्यों. इथनोबाटनी. वर्ष 4: पृष्ठ 75–79।
- तिवारी डी.एन. 1992. वनों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व. सचित्र आयुर्वेद. जनवरी अंकः पृष्ठ 43–55।
- धीमान्, अनिल कुमार. 2003. सेकअर्ड प्लान्टस एंड देअर मेडिसिनल यूजेज. दया पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।